Is God An Invention?	क्या मनुष्य ने ईश्वर को गढ़ लिया है?
What would you say if you were not conditioned by your religion, by your fears; what would you say about God? Of course, God is a marvellous investment—you can preach about God and you will make a lot of money—as they are doing. Ojai 1979, D. 3	इसे आप क्या कहेंगे, यदि आप अपने धर्म, अपने भय के द्वारा अनुकूलित नहीं होते तो आप भगवान के बारे में क्या कहते? जी हां, बिलकुल, भगवान एक आश्चर्यजनक निवेश है– आप भगवान के बारे में प्रवचन कर सकते हैं और इससे आप बहुत अधिक धन कमा लेंगे––जैसा कि लोग कर रहे हैं। *ओहाई 1979, डी 3*
□	
Questioner: Do you believe in God? *Krishnamurti:* Either you put this question out of curiosity to find out what I think, or you want to discover if there is God. If you are merely curious, naturally there is no answer; but if you want to find out for yourself if there is God, then you must approach this inquiry without prejudice; you must come to it with a fresh mind, neither believing nor disbelieving. □*The Collected Works,* Vol. 2□	प्रश्नकर्ता : क्या आप भगवान में विश्वास करते हैं? कृष्णमूर्ति : या तो आपने यह प्रश्न इस जिज्ञासा से पूछा है कि मैं क्या सोचता हूं या आप यह खोजना चाहते हैं कि क्या भगवान है। यदि आप जिज्ञासु मात्र हैं तो वाकई कोई उत्तर नहीं है; पर यदि आप अपने लिए यह खोजना चाहते हैं कि क्या भगवान है तो आपको इस अंतर्खोज तक बिना किसी पूर्वाग्रह के पहुंचना होगा; आपको इस तक बिना विश्वास और बिना अविश्वास वाली एक ताज़ी मानसिकता के साथ पहुंचना होगा। *द कलेक्टेड वर्क्स, खण्ड 2*
Man has throughout the ages been seeking something beyond himself, beyond material welfare—something we call truth or God or reality, a timeless state—something that cannot be disturbed by circumstances, by thought or by human corruption. And not finding this nameless thing of a thousand names which he has always sought, he has cultivated faith—faith in a saviour or an ideal. □*Freedom from the Known,* Ch. 1	युगों-युगों से मनुष्य स्वयं से परे, भौतिक कल्याण से परे कोई चीज़ खोजता चला आ रहा है––ऐसी चीज़ जिसे हम सत्य, परमात्मा, यथार्थ या एक ''कालातीत अवस्था'' के नाम से पुकारते हैं––ऐसी चीज़ जिसे परिस्थितियां, विचार या मानव भ्रष्टाचार छू तक न पाये। और हज़ार नामों वाली इस नामरहित चीज़ को सदा खोजने पर भी न पाकर वह आस्था पैदा कर लेता है––आस्था, किसी उद्धारक या आदर्श में। *(प्रथम और अंतिम मुक्ति, अध्याय 1)*
How can the mind, which is so conditioned, which is shaped by the environment, by the culture in which we are born, find that which is not conditioned? How can a mind that is always in conflict with itself find that which has never been in conflict? So in inquiring, the search has no meaning. What has	हम जिस संस्कृति में पैदा हुए हैं और जिस वातावरण में ढले हैं हमारा मानस उससे बहुत अनुकूलित है तो ऐसा मानस यह कैसे जाने कि वह अनुकूलित नहीं है, संस्कारबद्ध नहीं है? एक मस्तिष्क जो हमेशा स्वयं के साथ द्वंद्व में रहा है वह उसे कैसे जान सकता है जिसका द्वंद्व से कभी कोई सरोकार नहीं रहा? इसलिए

meaning and significance is whether the mind can be free—free from fear, free from all its petty little egotistic struggles, free from violence, and so on. Can the mind, your mind, be free of that? *That* is the real inquiry. And when the mind is really free, then only is it capable without any delusion of asking if there is, or if there is not, something that is absolutely true, that is timeless, immeasurable. *This Light in Oneself, Ojai 1973*	छानबीन में आपने क्या खोजा वह कोई मायने नहीं रखता, सबसे महत्त्वपूर्ण और अर्थपूर्ण चीज़ यह है कि क्या हमारा मन मुक्त हो सकता है--भय से मुक्त, अपने अहं के हर तरह के छोटे-छोटे तुच्छ संघर्षों से मुक्त, हिंसा से मुक्त...। क्या मन, आपका मन इससे मुक्त हो सकता है? यही वास्तविक छानबीन है। और जब मन वाकई मुक्त होता है तभी बिना किसी भ्रम के यह पूछने के योग्य होता है कि क्या वहां कुछ है या कुछ नहीं है, कुछ ऐसा है जो पूर्ण सत्य है, अनंत है, कालातीत है। *दिस लाइट इन वन सेल्फ, ओहाई 1973*
It is not the other shore that is important, but the bank you are on. You are this life of envy, violence, passing love, ambition, frustration, fear; and you are also the longing to escape from it all to what you call the other shore, the permanent, the soul, the Atman, God, and so on. Without understanding this life, without being free of envy, with its pleasures and pains, the other shore is only a myth, an illusion, an ideal invented by a frightened mind in its search for security. *Commentaries on Living*, Vol.3, Ch. 12	उस पार क्या है, महत्त्वपूर्ण यह नहीं, महत्त्वपूर्ण है वो तट जहां आप हैं। आप स्वयं डाह, हिंसा, क्षणिक प्रेम, महत्त्वाकांक्षा, विफलता, भय इनसे भरपूर प्रत्यक्ष जीवन ही हैं, और इन सबसे बच निकलने की प्रेरणा, तथा जिसे आप दूसरा किनारा मानते हैं, जो नित्य, प्राण, ईश्वर इत्यादि है, उस तक पहुंचने की लालसा भी आप ही हैं। यह जीवन समझे बिना, डाह जिसके अपने सुख-दुख हैं उससे मुक्त हुए बिना, दूसरा किनारा केवल कपोलकल्पित ही है, एक भ्रम, एक आदर्श, जिसे भयाक्रांत मन ने सुरक्षा की खोज में ईजाद किया है। *(जीवन भाष्य, खण्ड 3, अध्याय 12)*
Your belief in God will give you the experience of what *you* call God. You will always experience what *you* believe and nothing else. And this invalidates your experience. The Christian will see virgins, angels and Christ, and the Hindu will see similar deities in extravagant plurality. The Muslim, the Buddhist, the Jew, and the Communist are the same. Belief conditions its own supposed proof. What is important is not what you believe but only why you believe at all. Why do you believe? Is it fear, the uncertainty of life—the fear of the unknown, the lack of security in this ever-changing world? *The Urgency of Change*, Ch. 21	ईश्वर में आपका विश्वास ही आपको उसका अनुभव करायेगा जिसे *आपने* ही ईश्वर की संज्ञा दी है। आप जो विश्वास करते हैं सदैव वही अनुभव करेंगे, और इसके अलावा कुछ भी नहीं। और यही बात आपके अनुभव को अर्थहीन बना देती है, जिसकी कोई प्रमाणिकता नहीं। एक ईसाई हमेशा मरियम, देवदूत और ईसामसीह को ही देखेगा, ऐसे ही एक हिंदू अनेक देवताओं को ही देखेगा। मुसलमान, बौद्ध, यहूदी तथा साम्यवादी भी ऐसे ही हैं। विश्वास अपने ही द्वारा कल्पित परिणाम को पुष्ट करता है। आप क्या विश्वास करते हैं यह महत्त्वपूर्ण नहीं है पर आप विश्वास क्यों करते हैं यह महत्त्वपूर्ण है। आप विश्वास करते ही क्यों हैं? चाहे आप एक चीज़ में विश्वास रखें या दूसरी में, जो यथार्थ है उसमें इस बात से

	फर्क ही क्या पड़ता है? तथ्य कभी विश्वास या अविश्वास से प्रभावित नहीं होते। अतः हमें पूछना है कि हम विश्वास करते ही क्यों हैं, विश्वास का आधार क्या है? क्या यह भय है, क्या यह जीवन की अनिश्चितताएं हैं--अज्ञात का भय, नित्य परिवर्तनशील दुनिया में सुरक्षा का अभाव? *द अर्जेन्सी ऑफ चेंज, अध्याय 21*
In India they are conditioned one way: they believe in different gods. You come to Europe, they believe in a certain God, in God's son, in the Absolute, and so on. And there are people who have never, never heard of Christ, and they say, 'Who is he?' 'My God is more important than that man's'. So it all depends on your conditioning. One doesn't see this. When the mind is free from that conditioning, what is God? So that is why man, out of his fear, out of his loneliness, out of his extraordinarily hopeless state, says there must be something that will protect him—the father image which he worships. So man creates God. *Ojai 1979, D. 3*	भारत में लोग एक ख़ास तरीके से संस्कारित हैं : वे अलग-अलग भगवानों में विश्वास करते हैं। आप यूरोप आइए, वे एक निश्चित ईश्वर, ईश्वर के बेटे, निरपेक्ष सत्ता आदि में विश्वास करते हैं। और ऐसे लोग हैं जिन्होंने कभी ईसा के बारे में नहीं सुना, वे कहते हैं, ''कौन है वह?'' मेरा ईश्वर उस आदमी के ईश्वर से अधिक महत्त्वपूर्ण है। ये सभी कुछ आपके अपने संस्कारों पर निर्भर करता है। कोई इसे देख नहीं पाता। जब मन इन तमाम संस्कारों से मुक्त होता है, तब ईश्वर क्या है? तो व्यक्ति, अपने भय, अपने अकेलेपन, अपनी असाधारण निराशाजनक स्थिति के कारण कहता है कि कुछ तो ऐसा हो जो उसकी सुरक्षा कर सके--पितानुमा प्रतीक जिसे वह पूज सके। तो व्यक्ति ही ईश्वर को बनाता है। ओहाइ 1979 डी 3
To be a theist or an atheist, to me, are both absurd. If you knew what Truth is, what God is, you would neither be a theist nor an atheist, because in that awareness belief is unnecessary. So to discover God or truth, the mind must be free of all the hindrances which have been created throughout the ages, based on self-protection and security. *The Book of Life,* 21 December	आस्तिक या नास्तिक होना, मेरी दृष्टि में दोनों ही मूर्खतापूर्ण है। अगर आप जानते हैं कि सत्य क्या है, ईश्वर क्या है तब आप न ही आस्तिक हैं, न ही नास्तिक, क्योंकि उस बोध की स्थिति में विश्वास अनावश्यक है। वह व्यक्ति जो सजग नहीं है जो सिर्फ उम्मीदों व अनुमान में जी रहा है वही स्वयं के समर्थन व आश्वस्ति के लिए तथा स्वयं को खास दिशा में कार्यरत रखने के लिए विश्वास या अविश्वास की शरण लेता है। *(जीवन की किताब, 21 दिसंबर)*
Under every stone and leaf, that which is eternal exists, but we do not know how to look for it. *The Collected Works,* Vol. 4	प्रत्येक पत्थर और पत्ती के नीचे वह है जो अनंत काल से अस्तित्व में है मगर हम यह नहीं जानते कि उसे देखा कैसे जाए। *द कलेक्टेड वर्क्स, खण्ड 4*
The *sadhu* told Krishnaji, 'Sir, for fourteen	एक साधू ने कृष्ण जी से पूछा, ''सर, पिछले

years now I have devoted myself to meditation, yet I am not able to get into *samadhi*. I have been practising meditation, *dhyana*, but I have not been able to go to the depths of it. Can I do this? Will you be able to tell me what my impediments are?' Krishnaji asked him to describe the kinds of meditative practices he had been following. After listening to him, he said, 'Do you realize that you are still acquiring? Open your fist. There is nothing to acquire.' For some minutes, the *sadhu* was silent. He then got up and prostrated himself before Krishnaji, who then asked him to stay on for some more time. After a while, the *sadhu* said, 'Sir, I want to ask you one more question. Is it the impact of your personality that has given me this (experience)? Is this due to your *gurukripa* (grace of the guru)?' Krishnaji replied, 'I knew you would ask this question. That is why I asked you to stay on for some more time. This is not something to acquire, but to give up. Release your fist. Leave everything.' He paused for a moment and said, 'Is it the new mind that is asking the question? You have been caught up in it again. I took you out of it, but you have gone back to it. If you stand firmly on that and let go everything, "it" will come. "It" will come, not because you want it, but "it" will come.' *A Vision of the Sacred,* by Sunanda Patwardhan	चौदह सालों से मैं ध्यान कर रहा हूं पर अभी तक मैं समाधि तक नहीं पहुंच सका हूं। मैं ध्यान का अभ्यास करता रहा हूं पर मैं इसकी गहराई तक नहीं पहुंच सका। क्या मैं इसे कर सकता हूं? क्या आप मुझे बताएंगे कि मेरे व्यवधान क्या हैं?'' कृष्ण जी ने उससे कहा कि वह उन्हें अपने ध्यान के अभ्यास के तरीके बताए जो वह करता आ रहा था। उसे सुनने के बाद, उन्होंने कहा, ''क्या आपको इस बात का एहसास है कि आप अभी भी कुछ इकट्ठा कर रहे हैं? अपनी मुठ्ठी खोलिए। यहां हासिल करने के लिए कुछ है ही नहीं। कुछ देर के लिए साधु शांत हो गया। उसके बाद उठा और कृष्ण जी के सामने दंडवत हो गया तब उन्होंने उसे कुछ देर और रुकने के लिए कहा। थोड़ी देर बाद साधु ने कहा, ''श्रीमान्, मैं आपसे एक और प्रश्न पूछना चाहता हूं। क्या यह आपके व्यक्तित्व का प्रभाव है जिसने मुझे यह अनुभव कराया? क्या यह आपकी गुरू कृपा के कारण है?'' कृष्ण जी ने उत्तर दिया, ''मैं जानता था आप यह प्रश्न पूछेंगे। इसीलिए मैंने आपसे कहा कि थोड़ी देर और रुकिए। इसमें कुछ हासिल करने जैसा नहीं है, बल्कि छोड़ना है। अपनी मुठ्ठी खोलिए। छोड़ दीजिए सब। वह एक क्षण के लिए रुके और बोले, ''क्या यह एक नया मन है जो प्रश्न पूछ रहा है? आप फिर से इसमें फंसते जा रहे हैं। मैंने आपको इससे बाहर निकाल दिया था पर आप फिर से वापस उसमें फंस गए। यदि आप दृढ़ता से इस पर टिके रहें और सभी चीज़ों को जाने दें तो 'यह' आएगा। 'यह' अवश्य आएगा, इसलिए नहीं कि आप इसे चाहते हैं बल्कि 'यह' आएगा ही।'' *ए विज़न आफ द सेक्रेड,* सुनंदा पटवर्धन